P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-10* June- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

साहित्य और संगीत में आध्यात्मिक समावेश का परम समन्वय

मैनेजर लाल बैरवा
वरिष्ठ शोध अध्येता,
संगीत विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

सारांश

भारतीय संगीत परम्परा में सदियों से साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संगीत और साहित्य में अध्यात्म का वैदिक परम्परा से ही प्रचलन रहा है अध्यात्म द्वारा इन प्रथक धाराओं में प्राणरूप में महति भूमिका निभाई है। लोकगीत प्राचीन होते हुए भी अर्वाचीन हैं। ये पुराने अथवा बासी तो कभी होते ही नहीं। चिर जीवन का चिर यौवन बने रहने का सौंदर्य ही लोकगीतों की सबसे बड़ी विशेषता है। आकाश की उन्मुक्ता, पवन की स्वछन्दता, सरिताओं की कल–कल नाद भरी सुन्दरता, पक्षियों की कर्णप्रिय चहचहाहट, सागर की गंभीरता, झरनों की चंचलता लिए लोकगीत मनोरंजन, मनमोहक हो लोकगीतों में वर्ग या वर्ण का वैषमन्य, अमीरी–गरीबी का भेद अथवा सम्पन्न या विपन्न का अंतर नहीं होता। लेकिन जब अध्याात्म लोकगीतों में प्रवेश किया तब दिव्य संगीत आमजन में प्रविष्ट हुआ। आध्यात्मिक समावेश माध्यम से ही संगीत में प्रभू सत्ता में विश्वास आमजन में सकारात्मक ,भावात्मक विचारों का उदय करने में काफी महत्व है। सूफी मत परम्पराऐं,धार्मिक विचारों को साहित्य और संगीत के माध्यम से पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अध्यात्म इन दोनों के उच्च स्तर द्वारा सरल रूप से आमजन तक पहुच जाता हैं जितने भी धर्मग्रंथ है चाहे गीता, कुर्आन ,बाईबल आदि के मूलभूत तत्वों को पहुंचाने में साहित्य औा संगीत की आवश्यकता रही है। मनुष्य सभी जीवों में उच्च स्तरीय इसलिए है क्योंकि हमारा संगीत और साहित्य परम्परा में आध्यात्मिक समावेश है जो हमेंशा सद्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

मुख्य शब्द : साहित्य और संगीत ,आध्यात्मिक विकास ,धार्मिकमत एवं धार्मिक ग्रंथ आदि।

प्रस्तावना

अध्यात्म–लेपित संगीत और साहित्य मानव जीवन के वो पहलु हैं जिनको अगर मानव जीवन से निकाल दिया जाये तो मानव जीवन पशु तुल्य हो जाता है वर्तमान संदर्भ में आप देख लीजिए जहाँ सामाजिक व पारिवारिक स्तर पर इनका अभाव होगा वो स्थान पाश्चात्य रीतिकाल से प्रभावित होगा, वहां के आचरण, मनोभाव व कर्म कौशल अशुद्ध होंगें, उनके द्वारा दी गई, अभिव्यक्ति उच्च कौशलमय नहीं होगी अतः हमें संगीत और अध्यात्म से जुड़ना चाहिए। हमें विरक्त जीवन नहीं जीना चाहिए। युगों से प्रवाहित इन दोनों धाराओं ने मानवीयता, सूकुन, जीवन के उच्च चारित्रिक आदर्श में महती भूमिका निभाई है। हमारा संस्कृति आजकल की नहीं बनी है कितनी ही सदियां गुजर गई, लेकिन इन दोनों धाराओं ने इंसान के अस्तित्व को बनाये रखा है।

अगर देखा जाये तो इन्सान ने विज्ञान खोज माध्यम से इन्सानी जीवन को काफी हद तक समझने की कोशिश की है लेकिन अभी तक एक रक्त की बूंद तक निर्मित नहीं कर सका है। शारीरिक अंगों का उपचार तो विज्ञानीय माध्यम से हो रहे हैं लेकिन मानसिक स्तरीय खास तौर से मनोभाव, रस निष्पति आदि, आत्मीय भावों की ऐसी कोई वैज्ञानीय युक्ति नहीं बनी जिसके माध्यम से इनको बदला जा सके, ये सब हमारे संगीत और अध्यात्म से स्वतः ही विकसित हो जाते हैं, हमें अपने जीवन में इन दोनों धाराओं का समावेश बनाये रखना चाहिए।

साहित्यावलोकन

अध्यात्म लेपित संगीत और साहित्यमय झरना सदियों से अनवरत प्रवाहित हो रहा है इस परम्परा का निर्वहन अनेक अध्यात्म साधकों मतों एवं सूफी सम्प्रदायों प्रणेताओं, कवियों और संतों ने इसका समावेश किया जिनमे कबीर ,मीराबाई ,रैदास, तुलसीदास एवं रहीम आदि की सराहनीय भूमिका रही

है। 2015 में डॉ.अनीता जनजानी ने ''भारतीय संगीत को सिंधु समाज का योगदान ''में लिखा है कि "भारतीय विद्वानों ने संगीत को ह्रदयगत भावों के उद्घाटन का सबल साधन माना है, वहीं भारतीय विचारकों ने इसे ईश्वरीय वाणी तथा ब्रह्य रूप कहा है।" 2006 में डॉ. रूचि गुप्ता ने ''भारतीय संस्कृति शाश्वत जीवन दृष्टि एवं स्वरूप'' में लिखा है कि "भारतीय संस्कृति के दृष्टिकोण में कला मन से मन का यानी आत्मा का संवाद है। सौन्दर्य इस संवाद का आधार है। भारतीय कला चिंतकों ने इसे आध्यात्मिक कहा है। आध्यात्मिक भारतीय कला दृष्टि का अपना मुख्य तत्व है। प्रश्न उठता है कि इसका क्या तात्पर्य हुआ पहले तो यह है कि कला की आध्यात्मिक भारतीय जीवन दर्शन की देन है। समष्टि जीवन की अभिव्यक्ति है, यही वह कारण है कि इसमें सच्चाई होने के साथ–साथ जीवन की मीठी खुशबु और गहराई है। भारतीय संस्कृति की दृष्टि में कला चेतन की अभिव्यक्ति और चिन्मय (ज्ञानमय) जीवन की एक पूर्ण और श्रेष्ठ विधि है, इसमें जीवन जगत के समस्त पार्थिव उपादान एक अद्भुत सौंदर्य के प्रकाश से प्रकाशित होकर आनंद के अक्षय स्वरूप को निर्मित करते हैं। कला का लक्ष्य ही सौन्दर्य और आनंद के इस स्वर्ग को जीवन जगत में स्थायी बनाए रखना है। " 2015 के पश्चात कोई शोध कार्य इस विषयानुसार पुस्तक के रूप में प्राप्त नहीं हुआ है।

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान में साहित्य और संगीत में अश्लील शब्दावली के बढते प्रचलन से मानवीय मूल्यों में हो रहे हास को देखते हुए अध्यात्म के महत्व को आमजन तक पहुंचाना हैं। साहित्य और संगीत में अध्यात्म का समावेश इस शोध परक आलेख का प्रमुख उद्देश्य है।

अध्यात्म–लेपित साहित्य और संगीत

दुनियाभर के धर्मों में प्रभु सत्ता को महत्व दिया है, विभिन्न देशों के अपने–अपने धार्मिक मान्यताओं में निहित संगीत रूपेण, साहित्य रूपेण, अभिव्यक्ति, अध्यात्म का विकास और आध्यात्मिक साहित्य का मानव जीवन पर महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आध्यात्मिक साहित्य चाहे वो गेय हो या काव्यात्मक रूप में हो, आध्यात्म का विकास करता है व आंतरिक मनोभावों के संचालन, चारित्रिक विकास में योगदान देता है। सभी धर्मों में धार्मिक साहित्य के मायने अलग–अलग हो सकते हैं, लेकिन सभी का ध्येय प्रभु रिझावन का होता है।

"कुर्आन के अनुसार संगीत हराम है, पूर्णतः वर्णित है एवं त्याज्य है"[1] जबकि सामवेद पूर्णरूपेण गेय रचनाऐं हैं, ऐसा धार्मिक विचारानुसार मान्यताऐं जबकि मस्जिद में अजान का गायन समयानुसार होता है। ये अजान मुस्लिम समुदाय में आध्यात्मिक वृद्धि का द्योतक होती है।

आध्यात्मिक संगीत सरल माध्यम से जन–मन में रच–बस जाती है, क्योंकि संगीत ही सूक्ष्म माध्यम है जिसके जरिये सतत रूप में अध्यात्म काल के आगोश में पलित–फलित रहा है। मनुष्य का चिन्तनशील होना व चित को शांत रखना आध्यात्म में समाहित रहता है जो संगीत का प्रमुख कारक भी है। अध्यात्म का उद्देश्य सामाजिक प्राणी को प्रभु सत्ता का आभास कराना व आत्मिक सुकुन देना है, ये कार्य संगीत के माध्यम से शीघ्र हो जता है। "ईश्वर की भक्ति से मन की यह इच्छित अवस्था बहुत शीघ्र प्राप्त होती है। ईश्वर का ध्यान यह है अर्थात ऐसी आत्मा जो कलेश, कार्यों और कामनाओं से रहित है उसमें सर्वज्ञता का गुण अनंत रूप से ही और वह सब आदिम लोगों को ज्ञान देने वाला है क्योंकि समय उसको नहीं व्याप्ता।" (यांगसूत्र 1,25 और 26)। ओडमू शब्द से वह सूचित किया जाता है।''[2]

जैसा कहा गया है कि ओउम् सृष्टि का रचियता रहा है जो ध्वनि का नाद रूप है जबकि विविध समाजों में विविध धर्मों में उनकी मान्यताऐं रही हैं जिनके कारण समाज में नैतिकता, सदाचरण, सदव्यवहार, प्रेमभावना, दया आम से खास इन्सानों में जीवंत रहती है। सब उस प्रभु की देन है उनको दिया है उसी का होना है। ये सब इसलिए आज तक जिंदा तत्व है क्योंकि अध्यात्म (धर्म) की जड़ सदा हरी रहती है और उसमें सम्प्रेषण तत्व हमारा संगीत है जो उसे कभी भी नहीं मरने देता है।

संगीत और मानव जीवन का विकास

धरा पर मानव का प्रारम्भिक विकास और आध्यात्मिक विकास एक दूसरे के पूरक रहे हैं, शुरूआत में जब मानव समझदार हुआ होगा उसने अपने जीवन कौशलों में प्रभु सत्ता का महत्व, परमेश्वर, परमपिता का महत्व व पंचभूत तत्वों का योगदान स्वीकार किया होगा उस समय जो अभिव्यक्ति गायन–वादन करके दी होगी, वो लोक संगीत या प्रभु भक्ति संगीत में युगीन फलकों पर फैली परिष्कृत, अध्यात्म व संगीत का परिष्कृत रूप रही है, जो वर्तमान में हम इसके गवाह हैं और आगे भी ऐसे ही नवाचारीय धरातलों पर अवलम्बित रहेगी।

धर्म और संगीत

मानवीय जीवन और आध्यात्मिकता साहित्य और संगीत की विविध सामाजिक, धार्मिक व रीति–रिवाजों के साथ गहरी पेठ रही है सामाजिक जीवन में आध्यात्मिक साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान रहा है, सभी समाजों ने अपने मानदन्डीय ग्रंथ, धार्मिक मान्यतायें सदियों से अपने जीवनरूपीय आवरण में आवर्णित कर रखी है, धार्मिक संगीत और साहित्य का अपना अलग ही इतिहास रहा है, इसका व्यापक रूप समस्त सृष्टि में व्याप्त है। ये ऐसे माध्यम हैं जो इन्सानों को सदमार्ग दिखाते हैं और इन्सानी जीवन में चारित्रिक विकास करने में योगदान देते हैं और उस प्रभु सत्ता से जुडने के लिए प्रेरित करते हैं।

प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान काल में इन दोनों धाराओं का संवर्धन व परिष्कृत रूप में प्रारम्भिक स्तर पर काल–प्रशासन ने महत्वपूर्ण योगदान निभाया है ऐसा प्रशासन जो प्रारम्भ में स्वंय के स्तर पर स्थापित रहा, बाद में आंचलिक व परिवेशीय रहा है, प्रजा और राजा के स्तर पर विकास हुआ जो वर्तमान में हमारी कला, संस्कृति मंत्रालय द्वारा किया जाता है लेकिन आज के समय में इसके मायने बदल गये हैं।

"कहा जाना चाहिए कि सभी राज्यों–रियासतों का तथा उनके शासकों का अध्यात्म–लेपित संगीत और साहित्य के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान रहा है जिन शासकों ने स्वंय संगीत का विचार किया और उसके लिए

ठोस कार्य भी किये उनके नाम तो विशेष रूप से लिये ही जाते हैं, परन्तु जो शासक स्वंय संगीतज्ञ नहीं थे वे भी संगीत पारखी अवश्य रहे। उनके आश्रय में बहुचर्चित संगीतज्ञ भले न हो परन्तु संगीत की धारा को कम–अधिक रूप में प्रभावित रखने में उनका सहयोग कम नहीं था। इन्हीं शासकों के कारण मध्य भू–भाग अथवा मध्य प्रान्त में संगीत का विशेष विकास हुआ।"[3]

शास्त्रीय संगीत साहित्य एवं धर्म का सहसम्बन्ध

धर्म की गोद में पले बडे अध्यात्म–लेपित संगीत और साहित्य ने अपने आप में समयी फलकों पर नवाचारीय परिवेश आवर्णित किये हैं। संगीत का स्वरूप लोक शैलियों से परिशुद्ध होता हुआ भारतीय शास्त्रीय संगीत के बंधनों में विशुद्ध मध्यकाल में चरम सीमा पर प्रचारित–प्रसारित रहा है। उस समय का काल सर्वोच्च आध्यात्मिक साहित्य व संगीत का नवाचारीय काल रहा है, जिसमें अनगिनत नवाचार हुए धर्म ने अपने ही रूपों में रचना धर्मिता को ओढा, उस समय में धर्म और संगीत का साथ उच्च स्तरीय रहा है। आधुनिक काल व वर्तमान समाजों ने संगीत के अपने सामाजिक रीति–रिवाज व आंचलिक आवरणों को लेपित कर रखा है।

अध्यात्म–लेपित साहित्य एवं संगीत के संदर्भ में भारतीय संस्कृति का नजरिया

"भारतीय संस्कृति के दृष्टिकोण में कला मन से मन का यानी आत्मा का संवाद है। सौन्दर्य इस संवाद का आधार है। भारतीय कला चिंतकों ने इसे आध्यात्मिक कहा है। आध्यात्मिक भारतीय कला दृष्टि का अपना मुख्य तत्व है। प्रश्न उठता है कि इसका क्या तात्पर्य हुआ पहले तो यह है कि कला की आध्यात्मिक भारतीय जीवन दर्शन की देन है। समष्टि जीवन की अभिव्यक्ति है, यही वह कारण है कि इसमें सच्चाई होने के साथ–साथ जीवन की मीठी खुशबु और गहराई है। भारतीय संस्कृति की दृष्टि में कला चेतन की अभिव्यक्ति और चिन्मय (ज्ञानमय) जीवन की एक पूर्ण और श्रेष्ठ विधि है, इसमें जीवन जगत के समस्त पार्थिव उपादान एक अद्भुत सौंदर्य के प्रकाश से प्रकाशित होकर आनंद के अक्षय स्वरूप को निर्मित करते हैं। कला का लक्ष्य ही सौन्दर्य और आनंद के इस स्वर्ग को जीवन जगत में स्थायी बनाए रखना है।"[4]

विभिन्न भक्तिमतीय अध्यात्म–लेपित साहित्य और संगीत

अतः भारतीय संगीत कला के प्रति संस्कृति का नजरिया उत्कृष्ठ स्तरीय रहा है। मध्यकालीन कला में संगीत और आध्यात्म का मिलाप चरमोत्कर्ष स्तर रहा जिनमें आदिकाल के समय में विधापति के पदों की गेयता मध्यकाल में भक्तिकाल रहा है। गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित रचनाएँ रागाधारित रही जो प्रमुख स्वरूपों में रही –

1. व्यक्तिगत भक्ति आंदोलन
2. वैष्णव भक्ति – हवेली संगीत, कृष्ण भक्ति द्वारा
3. निर्गुण संत – कबीर, रैदास, सुन्दर दास, दादू
4. सूफी – जायसी
5. कृष्ण भक्ति –मीरा,सूरदास, कुम्भनदास, नंद, हरिदास
6. रामभक्ति – तुलसीदास

अध्यात्म–लेपित साहित्य और संगीत का चौली–दामन का साथ इस काल में रहा है। भारतीय शास्त्रीय संगीत का स्वर्णकाल रहा, जिसमें तानसेन जैसे अमर संगीत सम्राट पैदा हुए, संगीत का स्तर उच्चकालीन राज परम्पराओं तक सीमित रहा, घरानेदार तालीमबद्ध रहा, लेकिन आमजन ने इन रचनाओं के भाव सम्प्रेषण जनमान्य व प्रचारित–प्रसारित रहे।

अध्यात्म–लेपित साहित्य और लोक संगीत

इसी प्रकार अध्यात्म–लेपित साहित्य और संगीत को जोड़ने में आध्यात्मिक रचनाओं का लोकगीतों में होना भी महत्वपूर्ण योगदान है। लोकगीत रचनाऐं ऐसी रचनाऐं रही हैं जो गीत के प्रकारीय रचनाऐं हैं, लेकिन गीत के धार्मिक रूप को ओढने पर विभिन्न अंचलों में गेय बनकर प्रचलित रही है व प्रचारित है। जिनमें देव–देवियों के गीत विभिन्न अंचलो, प्रदेशों में रहे हैं। अतः लोकगीत भी धर्म और संगीत से जुड़ने का माध्यम रहा है।

"लोकगीत प्राचीन होते हुए भी अर्वाचीन हैं। ये पुराने अथवा बासी तो कभी होते ही नहीं। चिर जीवन का चिर यौवन बने रहने का सौंदर्य ही लोकगीतों की सबसे बड़ी विशेषता है। आकाश की उन्मुक्ता, पवन की स्वछन्दता, सरिताओं की कल–कल नाद भरी सुन्दरता, पक्षियों की कर्णप्रिय चहचहाहट, सागर की गंभीरता, झरनों की चंचलता लिए लोकगीत मनोरंजन, मनमोहक तथा आहायक हो लोकगीतों में वर्ग या वर्ण का वैषमन्य, अमीरी–गरीबी का भेद अथवा सम्पन्न या विपन्न का अंतर नहीं होता।"[5]

सिन्धु समाज की भाव संगीत और साहित्य परम्परा

सिन्धु सभ्यता का संगीत में योगदान रहा है। इस समय में (1) लोक संगीत (2) आख्यान परख सुर संगीत (3) शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत। अतः सभ्यताओं का निर्वहन संगीत व अध्यात्म से प्रचलन में रहा है। संगीत और अध्यात्म को निम्न चरणों में सदियों से प्रचारित–प्रसारित किया जा रहा है–

1. संगीत और अध्यात्म
2. संगीत और धार्मिक साहित्य
3. धर्म, परम्परा और संगीत
4. धार्मिक आयोजन एवं संगीत
5. धार्मिक ग्रन्थ और संगीत
6. धार्मिक स्थल और संगीत
7. संगीत और धार्मिक इतिहास
8. संगीत और सभ्यताओं में वर्णित

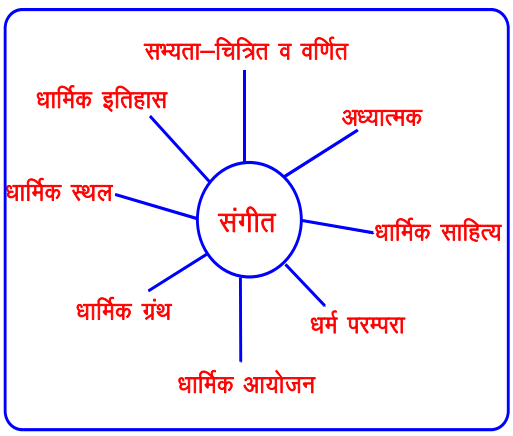

उपरोक्त धार्मिक कारकों के माध्यम से संगीत की निष्पति युग परिवर्तित धारा में रही है जिसका हमसे बहुत गहरा नाता है। आध्यात्म हमें परिष्कृत, संस्कारित व नैतिक धरातलों पर प्रतिपुष्ट करता है और नवीन भाव रस निष्पति कर आमजन में ह्रदय का शुद्धिकरण करता है।

"भारतीय संगीत के उद्भव के विषय में विभिन्न विद्वानों ने भिन्न–भिन्न दृष्टिकोणों से विचार किया है, इनमें बहुसंख्या विद्वान किसी न किसी रूप में धार्मिक मान्यताओं से संगीत के उद्गम को जोड़ने का प्रयत्न करते हैं।"[6]

अध्यात्म–लेपित संगीत और साहित्य का इतिहास

संगीत का उद्भव ईसा से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व वैदिक युग में साम गायन से शुरूआत रही जिसमें आध्यात्मिक साम रचनाओं का गायन किया जाता था।

"भारतीय संगीत आरम्भ से ही दो भिन्न धाराओं में प्रवाहित होता रहा है एक वह है जिसका प्रयोग धार्मिक समारोहों पर धार्मिक विधि–विधान के अंतर्गत किया जाता था जिसे वैदिक या साम संगीत कहा गया है। दूसरी वह है जिसका प्रयोग लौकिक समारोहों पर किया जाता था और जिसका उद्देश्य केवल लोगों का मनोरंजन करना था। ये दोनों धाराएँ समानान्तर रूप से चलते हुए समय–समय पर एक दूसरे को प्रवाहित करती रही। इनमें से पहली धारा को 'मार्ग' और दूसरी को 'देशी' नाम की संज्ञा दी गयी। अनेक योगियों व महर्षियों के चिन्तन–मनन व सतत साधना से ही संगीत का स्वरूप स्थिर हुआ।"[7]

अतः कहना आसान है कि अध्यात्म की वर्षों से मखमली चादर सांगीतिक आगोश में रही है। आच्छादित हमारा संगीत बहुमूल्य धरोहर है जो समस्त विश्व के लिए भी एक प्रेरणा का स्त्रोत है हमारी आध्यात्मिक धरोहर व हमारा भारतीय संगीत विश्व पटल पर अपनी स्वर्ण पटल पर स्वर्णाक्षरित अमिट छाप सदियों से रखता आया है, एवं वर्तमान संदर्भ एवं भविष्य में भी अमिट छाप बनी रहेगी।

भारतीय संस्कृति और संगीत

हमारी भारतीय संस्कृति में मानव मंगलीय कल्पना की जाती है। एकता में अनैकता का भाव हमारी संस्कृति का ध्येय रहा है।

"भारतीय संस्कृति इस अटूट आस्था पर टिकी हुई है कि इस दृश्य जगत के पीछे कोई अदृश्य या चेतन शक्ति है, यही अध्यात्म है। यही अध्यात्म हमारी संस्कृति के रोम–रोम में रमा हुआ है। समूचे जगत में ईश्वर व्याप्त है, यह विश्व ही विष्णु है, यह सब दृश्यमान विश्व ब्रह्म ही है, सियाराम मय सब जन–जानी, हमारा तो अक्षर भी अनश्वर है ओम का संगीत में नाद का ब्रह्मा है कला में भी सत्यं शिवं सुन्दरम् का आदर्श है जो सत्य और शिव से युक्त सुन्दर सृजन है वहीं आनंद का समुन्दर है ऐसा उच्च धरातल है भारतीय संस्कृति। इसलिए वह सनातन और सार्वदेशिक है। वह विश्व संस्कृति है, सबके लिए है। सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय है, वह सर्वेषां और सर्व की अभिव्यक्ति है, व्यक्ति ही नहीं सब सुखी हो, सबका हित हो, सबके हित में मेरा भी हित है।"[8]

हमारा संगीत हमारी संस्कृति का सम्वाहक है क्योंकि हमारी संस्कृति अध्यात्म–लेपित संगीत व साहित्य का उद्गम स्थल मानी जाती है। अतः हमें हमारी सभ्यता, साहित्य एवं संगीत पर गर्व है।

आध्यात्मिक परिवेशिय शिक्षा, साहित्य और संगीत

हम जिस धर्म के परिवेशीय अनुकरणकर्ता घर में जन्मित रहे हैं वहां हमें बचपन से ही सिखाया जाता है कि ये हमारे आध्यात्मिक गुरु, ग्रंथ या समुदाय हैं और उससे जुडी शिक्षा अन्यास ही बाल्यकाल में पा लेते हैं चाहे वो हमें अपनों से मिले या ईश–स्थलों या ईश माध्यम से मिले हैं व अपने धर्म के सबक बाल्यकाल में ही हम सीख चुके होते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हमारी युगों से चली आ रही संस्कृति के हम ही संवाहक है, हम ही कुछ अच्छा करके सुसमाज का निर्माण करेंगें।

"सभी परम्परा प्रधान संस्कृतियों में कला का अस्तित्व जीवन के सहज वातावरण के रूप में रहा है। कला कोई ऐसी गौण सृष्टि नहीं रही की निरंतर बढ़ती हुई जनता बराबर अवकाश के क्षण ढूंढकर उसका रस लेती, उसने कभी कोई ऐसा रूप ग्रहण नहीं किया मानों उससे केवल विशेषता का नाता हो और जीवन के सामान्य प्रवाह से उसका कोई संबंध न हो, कला का अस्तित्व व्यक्ति के जीवन में ताने–बाने में था उसे जीवन का अंग माना जाता था जैसे कोई जीव हवा में सांस लेता है, वैसे ही सहज वृति थी। परम्परा प्रधान संस्कृतियों की भस्म में से विवके–प्रधान संस्कृति हमारे समक्ष है।"[9]

इन्ही धरातलों पर हमारे अध्यात्म ने जन्म लिया और ये कलाओं के फलकों पर पलित–फलित रहा। संगीत ने अध्यात्म को नया रंग दिया जो आज हमारे समक्ष है।

अध्याम–लेपित साहित्य, संगीत और आयोजन

संगीत धर्म के प्रति श्रृद्धा भावना का प्रतीक होता है। अपने–अपने धर्म के अनुयायी अपने–अपने धार्मिक रीति–रिवाजों को निश्चित समयानुसार मनाते हैं उनके विशेष पर्व होते हैं चाहे हिन्दू–मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि कोई भी धर्म के अनुयायी हों वो धार्मिक आयोजन समय–समय पर करते हैं। जिससे आध्यात्मिक भावनाऐं जागृत होती हैं। ऐसे आयोजन साल में विशेष हो सकते हैं या दैनिक जीवन के साथ जुड़े ईशवंदीय हो सकते हैं। सभी धर्मों के लोग अपने आराध्य देवों का गुणगान करते हैं।

ऐसे आयोजन दो प्रकार के होते हैं

विशेष अवसर

सभी धर्म अनुयायी साल में विशेष अवसर, रीति–रिवाजों के आयोजन करते हैं। इन्हीं रीति–रिवाजों के समय वो आध्यात्मिक प्रवचनों या सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन जरूर करते हैं। हिन्दु अपने नवरात्रों में देवीय स्थापना व भजन संध्याओं का आयोजन करवाते हैं, मुस्लिम सूफी कार्यक्रमों (कव्वाली गायन) का आयोजन करते हैं। ऐसे ही सभी धर्मों में विशेष अवसरों पर सालभर आयोजन चलते रहते हैं ये आयोजन विशेष वर्ग में अध्यात्म की चेतना जागृत करते हैं। संगीत को शास्त्रों में मोक्ष प्राप्ति का साधन भी माना गया है।

दैनिक आयोजन

दैनिक आयोजनों में सकल सृष्टि में ईश्वरीय सत्ता में विश्वास रखने वाले, आध्यात्मिक स्थलों पर

नत–मस्तक होने व अपने परमपिता के दर्शन को जाते हैं वहां भी संगीत के रूप में हमें सुनाई देता है जो लगभग सभी धर्म इससे जरूरी मानते हैं कि संगीत ही एक सहज अभिव्यक्ति है। ऐसी भावना सभी को अध्यात्म से जोड़ती है। मुस्लिक धर्म में अजान का बहुत महत्व माना जाता है। हिन्दु धर्म में गायत्री मंत्र, आरती व भजनों का काफी महत्व माना जाता है, इसी प्रकार सभी धर्मों में व धार्मिक स्थलों में चाहे गुरुद्वारों में रागदारी संगीत हो या चर्च में गेय संगीत हो कोई भी धार्मिक स्थल संगीत के खिलाफ मुश्किल से मिलेगा, सभी अपनी–अपनी मान्यताऐं रखते हैं, लेकिन संगीत को अपने दैनिक जीवन में समाहित रखते हैं।

"भारतीय विद्वानों ने संगीत को हृदयगत भावों के उद्घाटन का सबल साधन माना है, वहीं भारतीय विचारकों ने इसे ईश्वरीय वाणी तथा ब्रह्म रूप कहा है।"[10]

अतः कहा जा सकता है कि हमारी सम्पूर्ण सृष्टि संगीत और आध्यात्म से लेपित है व सदगुणों की संवाहक है व संस्कृति निर्माण व संरक्षण में सहायक भी है।

धार्मिक ग्रंथ अध्यात्म–लेपित – साहित्य और संगीत

वैदिक काल से ही वेदों में संगीत का स्थान उच्च रखा है सामगान परम्परा व सामवेद का सम्पूर्ण संगीतमय होना व परिवर्तित समयी चक्रों में निर्मित ग्रंथ चाहे रामायण, महाभारत महाकाव्य हो या बाइबिल, गीता, कुरान हो या गुरु ग्रंथ साहिब का ग्रंथ हो सभी में संगीत का स्थान सर्वोपरि रहा है जिसे इनके मतों के संवाहकों ने आत्मसात किया है व माना भी है कि हमारी सांगीतिक परम्परा इन ग्रंथों के प्रचार–प्रसार में महती भूमिका रखती है जिससे अध्यात्म का विकास होता है। आमजन हृदय में धार्मिक बीजों का रोपण होता है और इन ग्रंथों के माध्यम से आमजन में ईश्वर सत्ता में विश्वास की भावना पैदा रही है और होती रहेगी जब तक युग परिवर्तनशीलता का उच्चतम स्तर नहीं पा लेता।

अध्यात्म का संगीत माध्यम से व विभिन्न कलामय होना

सभी प्रकार की 64 प्रमुख कलाओं का आध्यात्म वृत्ति विकसित करने में योगदान होता है लेकिन स्थापत्य कला, मूर्तिकला, चित्रकला का भी सराहनीय योगदान रहता है। संगीत कला तीव्रगामी सर्वोच्य होने का कारण गात्रवीणा द्वारा जनित–प्रसारित होना है। इसका प्रसारण स्तर सुगम है इसलिए इस कला का प्रमुख योगदान रहता है। इसका निर्माण ध्वनि के सूक्ष्म विभेद के कारण तीव्रगामी व भावों का सुगम समान भावीय सम्प्रेषण होती है इसलिए ये कला प्रमुख है। इस कला का चाहे शास्त्रीय रूप हो, अशास्त्रीय हो या सुगम व लोक स्वरूप हो, अध्यात्म को प्रवाहित करने में महत्वपूर्ण योगदान रखते हैं जो वर्षों से चली आ रही परम्परागत प्रक्रियाऐं हैं।

एकता में अध्यात्म–लेपित साहित्य और संगीत

इस कला के माध्यम से ईश्वर का गुणगान करना, सामूहिकता, एकता व अखण्डता में एकता का काम संगीत माध्यम से ही होता है। समूह में भोजन करना, समूह में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना व समूह के साथ समाज जुडा होता है।

"भारत के प्रत्येक प्रान्त में अपनी लोक कलाओं के माध्यम से समूह गायन, वादन तथा सामूहिक नृत्यों को पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित किया गया है। इस परम्परा का दिग्दर्शन विभिन्न प्रदेशों में प्रचलित गायन, वादन तथा नृत्य की विधाओं में होता है। हमारे संगीत में संकीर्तन रामलीला, लोक कथाऐं, लोकगीत, मंदिर मूर्ति के निर्माण में कलात्मक सौंदर्य ही प्रदान रहता है अथवा धर्म की भावना प्रधान रहती है। अजन्ता एवं एलौरा की गुफाऐं भी कला एवं धर्म के प्रतीक हैं, देवी–देवताओं की उपासना में, तीज त्यौंहारों एवं धार्मिक स्थलों पर यात्राओं और मेलों में नृत्य–वाद्य सहित समवेत स्वर में समूह गान तथा कीर्तन होते हैं, यह कलात्मक अभिव्यक्ति भी है और धार्मिक सौंदर्य भी।"[11]

निष्कर्ष

मेरे शोध पत्र का निष्कर्ष यह निकलता है कि अध्यात्म–लेपित साहित्य और संगीत संस्कृति एवं मानवीय गुणों के परिवर्धन में प्रमुख स्थान है इसलिए हमें हमारे बाल्काल से ही बालकों को अध्याम–लेपित साहित्य एवं संगीत से जोड़ना चाहिए। चाहे बच्चों के खेल के माध्यम से इन मूलभूत तत्वों को उनके जीवन में अंकुरित करना चाहिए या फिर शिक्षण माध्यम से इन मूलभूत गुणों का प्रचार–प्रसार व समावेश होना चाहिए, ताकि एक नव संसार का निर्माण हो सके जहाँ किसी के मन में भी किसी भी धर्म, साहित्य के प्रति गलत नजरिया विकसित न हो। सर्वधर्म संभाव विकसित करने में अध्यात्म–लेपित साहित्य और संगीत का महत्वपूर्ण योगदान है। अध्यात्म–लेपित साहित्य और संगीत से मानवीय हृदय में सुकून व सकारात्मक भावों का उच्च स्तरीय शिक्षण–प्रशिक्षण होना चाहिए। ये धारायें सदियों से सतत प्रवाहित रही हैं व रहेंगी। अतः हमें अध्यात्म–लेपित से जुड़ने के लिए संस्कारित साहित्य पढ़ना चाहिए व संगीत सुनना चाहिए एवं दैनिक जीवन में इन्हें शामिल रखना चाहिए, प्रारम्भिक शुरूआत भजन, गीत या सूफी साहितय व संगीत–माध्यम से कर सकते हैं ताकि हमारा भला हो सके तथा साथ ही मानवीय जीवन सफल हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Sunan Li –Abi Dawud, Chapter – Fil-NahiAnil Ghing, संगीत की अवैधानिकता।*
2. *मित्तल अंजली "भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं संगीत" कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ.सं. 21, संस्करण – 2003*
3. *श्रीखण्डे डॉ कला "मध्यप्रदेश में शास्त्रीय संगीत की विकास यात्रा" निर्मल पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ.सं. 40, संस्करण – 1945*
4. *गुप्ता डॉ. रूचि "भारतीय संस्कृति शाश्वत जीवन दृष्टि एवं संगीत" कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ. सं. 8, संस्करण – 2006*
5. *जनजानी डॉ. अनीता "भारतीय संगीत को सिन्धु समाज का योगदान" कनिष्क पब्लिकेशन्स, पृ.सं. 115, संस्करण – 2015*
6. *कालिया डॉ. शशि "भारत में समूहगान परम्परा एवं स्वरूप" सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ.सं. 36, संस्करण – 2005*

7. *कालिया डॉ. शशि "भारत में समूहगान परम्परा एवं स्वरूप" सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ.सं. 38–39, संस्करण – 2005*
8. *गुप्ता डॉ. रूचि "भारतीय संस्कृति शाश्वत जीवन दृष्टि एवं संगीत" कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ. सं. 7, संस्करण – 2000*
9. *राजश्री "सांस्कृतिक शिक्षा के उद्विकास में संगीत का योगदान" राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ.सं. 236, संस्करण – 2003*
10. *जनजानी डॉ. अनीता "भारतीय संगीत को सिंधु समाज का योगदान" कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ.सं. 14, संस्करण – 2015*
11. *कालिया डॉ. शशि "भारत में समूहगान परम्परा एवं स्वरूप" सत्यम पब्लिशिंग हाउस, पृ. सं. 119, संस्करण – 2005*